महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के 75वें जन्म दिवस पर विशेष अभिनन्दन समारोह

श्री निर्मल कुमार जी सेठी महामानव की उपाधि से अलंकृत

पूज्य मुनिश्री पुलक सागरजी महाराज के सान्निध्य में नई दिल्ली में हुआ भव्य अलंकरण समारोह

सर्वोच्च सर्वमान्य प्रतिनिधि संस्था है महासभा और महासभा के अध्यक्ष की निष्ठा और समर्पण ने इसकी गरिमा में चार चांद लगाएं हैं। **- मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज**

ऐसे कर्मयोगी विभूतियों की जैन समाज को बहुत आवश्यकता है

- प्रदीप जैन आदित्य, झांसी (केन्द्रीय राज्य मंत्री)

नई दिल्ली 5 अगस्त । पूज्य युवा मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज संघ के आशीर्वाद प्रेरणा एवं मंगल सान्निध्य में भारत की राजधानी नई दिल्ली के जिन शरणं सभागार (भोलानाथ नगर, शाहदरा) में आज भव्य समारोह में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के केन्द्रीय यशस्वी अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी का उनकी 75वीं (हीरक) जन्म जयन्ती के अवसर पर भव्य अभिनन्दन किया गया। भोलानाथ नगर, शाहदरा, नई दिल्ली की जैन समाज एवं चातुर्मास समिति के तत्वावधान में आयोजित इस विशेष अलंकरण समारोह में पूज्य मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज के आशीर्वाद, प्रेरणा एवं मंगल सान्निध्य में श्री निर्मल कुमार जी सेठी को महामानव की उपाधि से अलंकृत किया गया। इस महोत्सव में कोल्हापुर के भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन स्वामी जी, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री प्रदीप जी जैन आदित्य (झांसी), नई दिल्ली दिगम्बर जैन समाज के महामंत्री श्री चक्रेश जी जैन, श्री त्रिलोकचन्द जी कोठारी, श्री एस.के जैन (बीरा बिल्डर्स) , श्री मणिन्द्र जी जैन, श्री राकेशजी जैन, श्री जयकुमारजी उपाध्ये, श्री भरत कुमार जी काला, डॉ. पी.सी. जैन, श्री धनपालजी जैन, श्री सुरेन्द्र जी जैन आदि के साथ महिला समाज की प्रमुख श्रीमती रजनी जैन, श्रीमती निशा जैन, श्रीमती अलका जैन, श्रीमती रजनी कासलीवाल आदि भी उपस्थित थी।

इस अवसर पर श्री निर्मल कुमार जी सेठी को शॉल, माला, पगड़ी एवं विशेष रूप से तैयार रजत मुकुट पहनाकर अभिनन्दन पत्र के माध्यम से महामानव की उपाधि से अलंकृत किया गया। उपस्थित सभी भाई-बहनों ने खड़े होकर जोरदार करतल ध्वनि से इसका स्वागत किया।

इस अवसर पर पूज्य मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज ने महासभा को आशीर्वाद देते हुए कहा कि महासभा ने तथा इसके अध्यक्ष श्री निर्मल जी सेठी ने समाज, धर्म और संस्कृति के लिए बहुत कुछ किया है। इनके कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। धर्म की प्रभावना का, परम्पराओं का डंका बजा रहे हैं। उनके कार्य, समर्पण एवं व्यक्तित्व इतना विशाल है कि उन्हें सभी संतों का आशीर्वाद प्राप्त है। आप मुनि भक्त, तीर्थ भक्त, श्रुत भक्त हैं। अनेको उपाधियां आपको समर्पित हैं। संतों के प्रति जो इनका समर्पण है वह अनुकरणीय है। मुनिश्री ने कहा कि सर्वोच्च सर्वमान्य प्रतिनिधि संस्था है महासभा और महासभा के अध्यक्ष की निष्ठा, समर्पण इसकी गरिमा में चार चांद लगा रहे हैं। आपने धर्म की प्रभावना एवं धर्म के विस्तार का अभूत पूर्व कार्य किया है। संतों के प्रति अपने समर्पण तथा समाज के प्रति कर्त्तव्य निष्ठा से किए गए कार्यों के लिए मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज ने कहा कि संत की हैसियत से आशीर्वाद स्वरूप इस संत के स्वर में स्वर मिलाकर सम्पूर्ण विश्व की दिगम्बर जैन समाज आज आपको महामानव की उपाधि से अलंकृत करती है।

महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी को दिए गए अभिनन्दन पत्र का वाचन करते हुए मंच संचालक ने कहा कि भारत में ही नहीं, विदेशों में भी धर्म की प्रभावना करके इन्होंने श्रमण संस्कृति की प्रतिष्ठापना कर अपने जीवन को धन्य किया है। सच्चे पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हुए आपकी कर्तव्य निष्ठा हेतु चातुर्मास समिति एवं दिल्ली जैन समाज आपको महामानव की उपाधि से अलंकृत करते हुए गौरवान्वित है।

इस अवसर पर केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री प्रदीप जी आदित्य ने कहा कि श्री निर्मल कुमार जी हमारे लिए एक विभूति है जिन्होंने अपना पूरा जीवन जैन दर्शन के लिए समर्पित कर दिया है। देव शास्त्र गुरु के प्रति इनका पूरा जीवन समर्पित है। ऐसे कर्मयोगी व्यक्तित्व का सम्मान अवश्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि 7 लाख से भी ज्यादा गांवों में जैन समाज के घर हैं उन सभी को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए निर्मलजी ने महासभा के माध्यम से बहुत बड़ा कार्य किया है। उनका सम्मान कर मैं अपने आपको सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। श्री प्रदीप जी आदित्य ने कहा कि 120 करोड़ से भी अधिक आबादी है भारत में और जहां शान्ति भी है, यहां शान्ति का मुख्य कारण है - जैन दर्शन के सिद्धान्तों को अपनाना। जहां जैन दर्शन के सिद्धान्तों का उलंघन हुआ है, वहां अशान्ति हुई है। हमने धरती की छाती को फाड़ा, परिग्रह बढ़ाया, प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की। उसके परिणाम हमारे सामने हैं। जैन दर्शन के सिद्धान्तों का जहां उल्लंघन हुआ, उसका दुष्परिणाम हम देख रहे हैं। हजारों वर्ष पूर्व जो सिद्धान्त जैन दर्शन ने बनाए थे, वे आज भी प्रासंगिक है। जो पहले भी सत्य था वह आज भी सत्य है। उन्होंने कहा कि - दशा और दिशा देने का कार्य हमारे गुरु करते हैं और उसे आगे बढ़ाने का कार्य समाज में श्री निर्मल जी सेठी जैसे कर्मयोगी करते हैं। इन कर्मयोगियों की विभूतियों की हमें आवश्यकता है। इनका सम्मान हमारा अपना सम्मान है।

इस अवसर पर 5 हजार युवकों के संगठन, पुलक जन चेतना मंच के सदस्यों ने भी श्री सेठी जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

अपने अभिनन्दन से अभिभूत हो श्री निर्मल जी सेठी ने पूर्वाचार्यों की जय-जयकार करते हुए पूज्य मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए कहा कि जिन शासन की प्रभावना बढ़ाने तथा शिक्षा, जीर्णोद्धार आदि बातों को लेकर सन् 1892 में मथुरा में हमारे पूर्वजों ने महासभा की स्थापना की थी। बड़ी-बड़ी हस्तियों ने समय-समय पर इसे पुष्पित, पल्लिवत किया है। प्रमुख विद्वानों ने इसके माध्यम से महान कार्य सम्पादित किए हैं। हमने जब से इसका दायित्व संभाला है मुनियों का देश में बहुमान बढ़ा है, प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। अब समाज का सर्वांगीण विकास करना है। बच्चों को उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करना है। देश एवं विदेशों में जो प्राचीन जैन पुरातत्व सम्पदा है उसकी रक्षा करनी है। अहिंसा के कार्यों को आगे बढ़ाना है। श्री निर्मल जी सेठी ने आयोजकों के प्रति आभार जताते हुए महिलाओं तथा युवा वर्ग को धर्म के प्रभावना हेतु आगे आने का आह्वान किया।

धर्म-समाज-संस्कृति, जैन दर्शन तथा देवशास्त्र गुरु के प्रति अपने जीवन को समर्पित कर देने वाले कर्मयोगी आदरणीय श्री निर्मलकुमार जी सेठी को उनके 75वें जन्म जयन्ती के अवसर पर उनके कर्तव्य निष्ठा एवं समर्पण हेतु महामानव की उपाधि से अलंकृत होने पर महासभा गौरवान्वित है।

स्वागत और अभिनन्दन का यह पर्व आज है प्यारा,
सेठी जी हैं ऐसे जिनसे गौरव बढ़ा हमारा

- अजीत पाटनी, कोलकाता